JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में लोकगीत

(एक अध्ययन)

1. हेमराज कंवर शेखावत 2. डॉ. राजेश कुमार शर्मा

1.शोधार्थी–हिन्दी विभाग भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान
2.शोध निर्देशक एसोसिएट प्रोफेसर (सेवानिवृत्त) सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय अजमेर

सारांश

मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' उपन्यास में लोकगीतों की भरमार है। लोकगीतों में सुर–लय है। लोक जीवन, लोक चेतना भरी पड़ी है। अतरपुर गाँव में लोक जीवन है, लोक पर्व है, लोकगीत है, लोक उत्सव है, लोक रीति–रिवाज, परम्पराएँ, तीज–त्योहार, लोक आहें–कराहें है, धूप है और अंचल में धूल है। लोकगीत लोक जीवन की जीवन धड़कनों को अभिव्यक्त करते हैं। लोक जीवन की जैसी सरल, नैसर्गिक अनुभूतिमयी अभिव्यंजना का चित्रण लोकगीतों व लोक कथाओं में मिलता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।

मुख्य बिन्दु :लोक संगीत,प्रमुख कृंतिया,विविध लोकगीत व निष्कर्ष

मैत्रेयी पुष्पा के शब्दों में, ''मन में गाँव घूमता है। 'इदन्नमम लिखा, अब फिर गाँव'! .....''। 1

''लय में घुले शब्द ..... मैंने गीतों को कथा का आधार बनाया।'' 2

प्रख्यात साहित्यकार मैत्रेयी पुष्पा महिला कथाकारों में सिरमौर है। उनके कथा सहित्य में बृज प्रदेश और बुन्देलखण्ड की मिट्टी की सौंधी गंध है। भाषा और मुहावरे में भी मिट्टी की गंध है। मैत्रेयी पुष्पा के लोकगीतों में भी मिट्टी की भीनी–भीनी खुशबू है। मैत्रेयी पुष्पा ने जीवन को बहुत करीबी से देखा, परखा व भोगा और तीव्र अनुभव कर साहित्य में विचारों के रूप में प्रस्तुत किया। कथाकार मैत्रेयी पुष्पा का लेखन एक नारी–विमर्श, लोक जीवन और लोकगीतों पर केन्द्रीत है। बुन्देलखण्ड और बृज प्रदेश की लोक–सभ्यता और लोक संस्कृति, लोक विश्वास, लोकगीत, लोक पर्व, लोक त्योहार, लोक कथायें उनके साहित्य में साकार हो उठी है। मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में 'स्त्री विमर्श व लोक जीवन', 'लोकगीतों' की भीनी–भीनी खुशबू है। मैनेजर पाण्डेय के शब्दों में, ''चाक की कथा एक स्तर पर गद्य में चलती है और इसके साथ दूसरे स्तर पर लोकगीतों में।'' 3

राजेन्द्र यादव के शब्दों में, ''मैत्रेयी न वक्तव्य देती है न भाषण। वह पात्रों को उठाकर उनके जीवन और परिवेश को पूरी नाटकीयता में देखती है। ..... मुहावरे दार जीवंत और खुरदरी लगने वाली भाषा की गवई ऊर्जा मैत्रेयी पुष्पा का ऐसा हथियार है जो उन्हें समकालीन कथाकारों में सबसे विशिष्ठ और अलग बनाती है।'' समूचा लोक जीवन मानवीय क्रिया–कलापों के सूत्र को लेकर चलता है। ''लोक जीवन अंचल विशेष के समग्र व समेकित संश्लिष्ट जीवन को रूपायित करता है। आँचलिकता व लोकतत्व का घनिष्ठ संबंध है।'' 4 साहित्य और लोक जीवन का घनिष्ठ संबंध है। भारत की पचहत्तर प्रतिशत जनता गाँवों में निवास करती है। इन्हीं गाँवों में भारत की सभ्यता, संस्कृति व लोक जीवन, आँचलिकता की झलक मिलती है। महात्मा गाँधी के अनुसार, ''भारतवर्ष की आत्मा गाँवों में निवास करती है।''

मैत्रेयी पुष्पा की प्रमुख कृतियाँ:

1. उपन्यास– 'चाक', इदन्नमम, बेतवा बहती रही, झूलानट, अल्मा कबूतरी, कहीं ईसूरी फाग।

2. कहानी – चिन्हार, ललमनिया, गोमा हँसती है।

3. आत्मकथा – कस्तूरी कुण्डल बसै, गुडिया भीतर गुडिया।

बीसवीं सदी के उत्तार्द्ध की सशक्त महिला कथाकार है मैत्रेयी पुष्पा। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में लोक जीवन साकार हो उठा है। बुन्देल खण्ड एवं बृज भूमि की लोक–सभ्यता व लोक–संस्कृति एवं सामाजिक व सांस्कृतिक सरोकार, लोक जीवन, लोक विश्वास, लोक मान्यताएँ, लोक परम्पराएँ, लोकाचार, रीति–रिवाज, लोक संस्कार, व्रत–त्योहार, मेले, उत्सव, लोकगीत, लोक नृत्य आदि उनके साहित्य में साकार हो उठे हैं। उनके उपन्यासों में विविध लोकगीतों की भीनी–भीनी खुशबू है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में लोकगीतों की भरमार है। इन लोकगीतों में ग्रामीण अंचल की मिट्ठी की खुशबू है। नारी–पात्र इन लोकगीतों को आत्मीयता एवं भावात्मकता से जाती है। इन लोकगीतों में ग्रामीण अंचल की स्थानीय रंगत है, लोक–संगीत है, गवई भाषा की ऊर्जा है। मैत्रेयी पुष्पा ने लोक–जीवन के विविध भावों, रंगों, मान्यताओं, परम्पराओं और विश्वासों को अभिव्यक्त करने के लिये लोकगीतों का बखूबी सहारा लिया है।

मैत्रेयी पुष्पा के कथा सहित्य में विविध लोकगीत :

लोकगीत लोक के गीत है जिन्हें कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा समाज अपनाता है। लोकगीत प्रत्येक देश और प्रत्येक जाति में अति प्राचीनकाल से गाये जाते रहे हैं और आज भी गाये जाते हैं। सामान्यतः लोकगीतों का रचनाकार अपने व्यक्तित्व को लोक को समर्पित कर देता है। ''शास्त्रीय नियमों की विशेष परवाह न करके सामान्यतः लोक व्यवहार के उपयोग में लाने के लिये मानव अपने आनन्द की तरंग में छन्दोवद वाणी सहज उद्भूत करता है वही लोकगीत है।'' 5 **डॉ. नगेन्द्र के अनुसार**, ''गीत साहित्य की आत्मा है जो किसी प्रेरणा के

भार से दबकर एकसाथ गीत में फूट निकलता है।'' 6 लोकगीत या लोकसंगीत लोक का उच्छ्वास है। लोक जीवन का सबसे अहम हिस्सा है जो रस से सरोबार है। लोक जीवन में हृदयगत भावों का अतिरेक बढ़ जाता है, तब वे भाव गीत के माध्यम से अभिव्यक्त होते हैं। लोकगीतों में रागात्मकता, संगीतात्मकता, रसानुभूति, नैसर्गिक भावद्रेक तथा गेय तत्व की प्रधानता होती है। मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में विविध लोकगीत है। जैसे–लोकगाथा/गाथागीत, उत्सवपर्व गीत, मांगलिक गीत, जातीय गीत, सगाई–विवाह गीत, नृत्य गीत, संस्कार गीत, फसल गीत, भक्ति गीत, फाग गीत, फागुन के लोकगीत, जलवा पूजन के गीत, ढोला गीत (राजा पिरथम की कथा), पहेली गीत व अन्य लोकगीत।

भक्तिगीत (कान्हा वाला गीत) लोकगीत– लोकगीत लोक जीवन का प्राण तत्व है। 'चाक' उपन्यास में लोकगीतों की भरमार है। चम्पाराम और झज्जू गीतों के खजानें हैं।

''कान्हा बरसाने में आ जइयो बुला रही राधा प्यारी
बुला रही राधा प्यारी रे, बुला रही राधा प्यारी/कान्हा .....
सोने को लोटा गंगाजल पानी,
अब तेरी गरज पड़े तौ पी जइयौ। बुला रही राधा प्यारी।'' 7

ढोला गीत (राजा पिरथम की कथा)–

''अरी लाज मेरी राख्यो, तू सारदे माय
कथा राजा पिरथम की सुनाऊ मोरी माय
अरे औखा रानी मंझा की मैं बरनूँ मोरी माया .....'' 8

जलवा पूजन के गीत–

राजा हो मेरे राजा, अरे तुम महाराजा न हो,
राजा हमें है तिलरिया की सार
तिलरी गढलावों, चुनरि रंगवाओं न हो .....'' 9

सगाई–लोकगीत– सगाई के अवसर पर कन्या पक्ष द्वारा गेय गीत है –

''छोटी–सी बनरी के लम्बे–लम्बे केस,
सो खेलें बबुल दरबार भले जू।
कै तुम बेटी मेरी साँचे में ढ़ारी,
कै गढ़ी सकल सुनार भलें जू।'' 10

प्रभाती गीत – 'अगन पाखी' उपन्यास में भोर की वेला के समय मधुर संगीत में सुरीला स्वर भुवन का है। धुन उठ रही है। लय बज रही है। लोक प्रभाती गाई जा रही है।

''उठो उठो सूरजमल भइया, भोर भए
उठो उठो चन्द्रमल भइयर, भोर भए
ना रे सुआटा, मालिनी खड़ी तेरे द्वार
इन्दरगढ़ की मालिनी ना रे सुआटा, हाट ई हाट बिकाय .....।
अमानसिंह की कुँवारि लड़ाइती ना रे सुआटा
भुवन बेटी निहोरा निहोरा नाय ..... । 11

फाग गीत– 'कहीं ईसूरी फाग' उपन्यास में ईसूरी के माध्यम से फागों का गाया जाना भारतीय संस्कृति की लोक परिचयामक्ता है। फाग के माध्यम से राधा–कृष्ण की गाथाओं का स्मरण किया जाता है। मानो राधा–कृष्ण साथ–साथ खड़े हो।

''जुबना बीते जात लली के
पर गए हाथ छली के।
मकसत रात पुरा पाले में
सरकत जात गली के
कसे रात चोली के भीतर, जैसे फूल कली के
कात ईसूरी मसके मोहन गेहें को ऊमली के।'' 12

मंगल गीत– कुसुमा भाभी का स्वर मंगल गीतों में सबसे ऊपर उभर रहा है –

''सिया बारी बनरी रघुनन्दन बनरे,
को को बरातै जॉय मोरेलाल।'' 13

ललमनियाँ नाच का गीत– ललमनियाँ बृज भूमि का लोकप्रिय नाच है जिसे मौहरों करती है। मौहरों को इस नाच से अटूट प्रेम है। ललमनियाँ नाच का गीत है –

''देख ललमनियाँ
पीरी पाग वारे तू देख ललमनियाँ
नैनन सुरमा वारे तु देख ललमनियाँ
ओ माया के लोभी, ओ जोरू के चाकर
बेटा के व्यापारी,
फिर देख ललमनियाँ ..... ।'' 14

देवता के लोकगीत– नवविवाहित वर बिना देवता पूजे वधू से नहीं मिल पाता है क्योंकि पहले देवता के लोकगीत गाँव की औरतें गाती है –

''कैसें कै दरसन पाऊँ री
माई तेरी सँकरी दुअरिया
माई के दुआरे एक कन्या पुकारै
दैदेउ सजन–वर जाऊँ री ..... माई तेरी .....।'' 15

सुआटा गीत–बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सुआटा गीत बहुत ही लोकप्रिय है। सुआटा की कथा लड़कियों द्वारा गाई जाने वाली वीर कथा है। इदन्नमम में सुआटा गीत का सौन्दर्य दृष्टव्य है –

''तिन के फूल तिन ही के दाने,
चन्दा उगे बड़े भुनसारे।
सारे वारे फूल सिराये,
काठ कठीले काठे से,
पाँचों भइया पंडा से
छटई बहन ईंगुर सी।'' 16

फागुन के गीत– विसुनदेवा सच्चे गायक की भाँति धीर मुद्रा में गाता है –

हूँ ..... सो श्यामा श्या मसो होरी खेलत नई
नंदनंदंन को राधा कीनों, माधव आय भईं/सो राधे रानी .....
सखा सखी भए, सखी सखा भईं, जसुमति भवन गईं
सो राधे रानी .....'' 17

अध्ययन के निष्कर्ष–

मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' उपन्यास में लोकगीतों की भरमार है। लोकगीतों में सुर–लय है। लोक जीवन, लोक चेतना भरी पड़ी है। अतरपुर गाँव में लोक जीवन है, लोक पर्व है, लोकगीत है, लोक उत्सव है, लोक रीति–रिवाज, परम्पराएँ, तीज–त्योहार, लोक आहें–कराहें है, धूप है और अंचल में धूल है। लोकगीत लोक जीवन की जीवन धड़कनों को अभिव्यक्त करते हैं। लोक जीवन की जैसी सरल, नैसर्गिक अनुभूतिमयी अभिव्यंजना का चित्रण लोकगीतों व लोक कथाओं में मिलता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। लोक जीवन में लोक मानव का हृदय बोलता है। प्रकृति स्वयं गाती है, गुनगुनाती है। लोकगीतों में निर्हित सौन्दर्य का मूल्यांकन सर्वथा अनुभूतिजन्य

है। लोकगीत लोक जीवन का प्राणतत्व है। मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में लोकगीतों की भरमार है। लोकगीतों की विविधता है।

ज्ञानरंजन के शब्दों में– ''जिस लोक जीवन से हमारी रचनात्मक धारा काफी पहले विमुख हो चुकी थी। उसकी अनेक परतें मैत्रेयी पुष्पा ने खोल दी है।'' 'चाक' उपन्यास में रूढ़ियों व परम्पराओं की भरी पूरी दुनिया, भाषा और मुहावरें में भी मिट्टी की गंध।''

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. मैत्रेयी पुष्पा : गुड़िया भीतर गुड़िया, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 231
2. मैत्रेयी पुष्पा : गुड़िया भीतर गुड़िया, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 231
3. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, आवरण पृष्ठ, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
4. डॉ. आनन्द मोहन उपाध्याय : फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों का लोकतात्विक अध्ययन, पृ.सं. 60
5. सम्मेलन पत्रिका, लोक संस्कृति अंक, पृ.सं. 250
6. डॉ. त्रिलोकीनाथ श्रीवास्तव : भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र, विनोद पुस्तक भण्डार, आगरा पृ.सं. 156
7. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 356
8. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 83
9. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 373
10. मैत्रेयी पुष्पा : इदन्नमम, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 108
11. मैत्रेयी पुष्पा : अंगनपाखी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 24–25
12. मैत्रेयी पुष्पा : कहीं ईसूरी फाग, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 110
13. मैत्रेयी पुष्पा : इदन्नमम, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 106
14. मैत्रेयी पुष्पा : ललमनियाँ, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 144
15. मैत्रेयी पुष्पा : बेतवा बहती रही, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 48
16. मैत्रेयी पुष्पा : इदन्नमम, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 116
17. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 358